International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 04, No. 01(I), January - March, 2022, pp.181-183

छात्रावास और गैर छात्रावास के विद्यार्थियों की आक्रामकता, समायोजन, अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

पूनम यादव*
डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा**

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन की संवाहक है, इसके द्वारा मानव की जन्मजात शक्तियों का विकास, ज्ञान कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और सभ्य, सुसंस्कारित एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। शिक्षा मनुष्य के सर्वागींण विकास के लिए निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा की प्रक्रिया उतनी ही पुरानी है जितना मानव जीवन। शिक्षा मानवीय चेतना का वह ज्योतिर्मय सुसंस्कृत पक्ष है जिससे उसके व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास होता है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य समृद्धि को प्राप्त करता है और उसके जीवन में पूर्णता आती है।

शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है, जो जीवन पर्यन्त चलती रहती है। प्रायः बालक के विकास की सुनियोजित दिशा एवं उसकी शक्तियों के समुचित विकास के लिए प्राचीन काल से ही विद्यालयों की स्थापना होती रहीं है। वर्तमान समय में अभिभावकों की बच्चों से अपेक्षाएं बढती जा रही है। अभिभावक अच्छे परिणामों की आस में अपने बच्चों को पारिवारिक वातावरण से दूर छात्रावास में डालने लगे हैं। उनका मानना है कि छात्रावास का वातावरण बालक की शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन एवं अध्ययन आदतों को विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

विद्यार्थी अपने परिवार की संस्कृति से भी प्रभावित होता है। प्रत्येक विद्यार्थी के जीवन में पारिवारिक वातावरण और क्रिया कलापों का प्रभाव अवश्य पड़ता है। अच्छे परिवार के विद्यार्थी में अच्छी आदतें और परम्परायें उत्पन्न होती है। वे व्यवहार कुशल सद्भावनापूर्ण उच्च शैक्षिक उपलब्धि, सुसमायोजन की भावनाओं से भरपूर होते हैं। परन्तु यदि परिवार में विपरीत वातावरण विद्यमान है तो विद्यार्थी में अनेक दोष और बुराईयाँ उत्पन्न हो जाती है। पारिवारिक वातावरण और बाहरी क्रिया कलापों का प्रभाव बालक के व्यवहार, समायोजन, और शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। कैंडोल के अनुसार ''बालक की बुद्धि पर वंशानुक्रम की अपेक्षा वातावरण का अधिक प्रभाव पड़ता है।''[1]

बालक जब माध्यमिक स्तर की शिक्षा के उपरान्त उच्च माध्यमिक स्तर की कक्षा में अध्ययन करता है तब वह तूफानी अवस्था अर्थात किशोरावस्था में होता है। किशोरावस्था में जो परिवर्तन होते हैं वे बड़ी तीव्रगति और विषमता के साथ होते हैं। वास्तव में इस अवस्था पर ही व्यक्ति के भविष्य का निर्माण अथवा विनाश दोनों ही निर्भर है। किशोरावस्था ही वह अवस्था है जिसमें मानव अपने भावी जीवन यापन की तैयारी की नींव रखता है। इसी अवस्था में बालक को शिक्षार्जन के लिए घर से दूर जाना होता है और इसी अवस्था में बालक में संवेगात्मक विकास तीव्रगति से होते हैं।

---

6 शोधछात्रा, राजऋषि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान।
** शोध निर्देशक, राजऋषि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय,अलवर एवं सहायक प्रोफेसर, आर्य महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, अलवर, राजस्थान।

1 डॉ गया सिह(2012)अधिगम कर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, आर लाल बुक डिपो, प् 64

काल और ब्रूस ने इस सन्दर्भ में कहा है कि– ''किशोरावस्था के आगमन का मुख्य चिन्ह संवेगात्मक विकास में तीव्र परिवर्तन है।''[1]

बालक शिक्षार्जन के लिए घर से दूर जाकर छात्रावास में रहकर अपना अध्ययन करता है। छात्रावास में बालकों को अपने परिवार के वातावरण से भिन्न वातावरण मिलता है। छात्रावास के वातावरण का प्रभाव बालक के व्यवहार, समायोजन, और शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। कई बार हम देखते हैं कि छात्रावास के छात्रों के व्यवहार में आक्रामकता दृष्टिगत होती है। समाजशास्त्र और मनोविज्ञान में आक्रामकता को हानि पैदा करने वाले कार्य के रूप में परिभाषित किया है।

आक्रामकता का अर्थ एवं स्वरूप

आक्रामकता एवं हिंसा एक ऐसा व्यवहार है जो मनुष्य तथा पशुओं दोनों में पाया जाता है। अतः आक्रामक व्यवहार एक सार्वजनिक घटना है। बैरन तथा बर्न (1987) ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है कि ''आक्रामकता एक अन्य जीवित प्राणी को कष्ट देने या चोट पहुँचाने के लक्ष्य से प्रेरित होकर किया गया वह व्यवहार है जिससे दूसरा प्राणी बचने की कोशिश करता है।'' आक्रामकता दो प्रकार की हो सकती है– सांवेगिक तथा नैमित्तिक। जब गाली खाकर व्यक्ति गाली देने वाले की पिटाई करता है तो यह संवेगात्मक आक्रामकता होगी। दूसरी ओर यदि कोई अपना अन्य उद्देश्य पूरा करने के दृष्टिकोण से किसी व्यक्ति पर आक्रमण करे तो इसे नैमित्तिक आक्रामकता कहा जाएगा।

समस्या का औचित्य

यह सर्वविदित है कि बालक के आवाशीय वातावरण का प्रभाव उनकी अध्ययन एवं अध्ययन आदतों, शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन पर विशेष रुप से पड़ता है। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि विद्यार्थियों के आवाशीय वातावरण का विद्यार्थियों के स्वभाव में आक्रामकता, अध्ययन आदतों, शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन का पता लगाया जाये और उनकी कमियों को दूर करने के लिए सुझाव दिया जाये। प्रस्तुत शोध के द्वारा विद्यार्थियों की आक्रामकता, समायोजन एवं अध्ययन आदतों की जानकारी करके उनकी कमियों को दूर करके भविष्य को संवारा जा सकता है। इन समस्याओं का अध्ययन इसलिए भी आवश्यक हो जाता है कि जब तक आक्रामकता, समायोजन, अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि आदि में कमियों के कारणों का वास्तविक पता नहीं लगेगा तब तक इन्हें दूर कर पाना संभव नहीं है। आज आपसी तालमेल में बहुत सी कमियाँ पायी जा रही है। जिससे छात्रावास का वातावरण ठीक नहीं रहता। इस वातावरण में रहने वाले बालक अपने आप को कैसे समायोजित कर पाते है ? यह एक विचारणीय बिन्दु है।

यदि वातावरण समुचित होगा तो बालक के व्यवहार में सौम्यता, समायोजन, शैक्षिक उपलब्धि स्तर व अध्ययन आदतें भी श्रेष्ठ होंगी। छात्रावास में शैक्षिक उपलब्धि व समायोजन व अध्ययन आदतों संबंधी अनेक समस्या आती है। क्योंकि बालक परिवार में तो समायोजन आसानी से कर लेता है परन्तु विद्यालय में नहीं । छात्रावास के बालक बालिकाओं की विद्यालय में शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन व अध्ययन आदतों के संबंध में अनेक समस्याएं उत्पन्न होती है । उन समस्याओं के पीछे वातावरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है । हम आये दिन समाचार पत्र पत्रिकाओं में पढ़ते हैं कि छात्रावास के बालकों नें लड़ाई झगड़े किये। विद्यार्थियों को लड़ते झगड़ते भीड़ एकत्रित करते भी देखा जा सकता है। भीड़ आक्रामकता को प्रभावित करने वाले कारकों में से सबसे महत्वपूर्ण कारक है। क्योंकि भीड़ से मनुष्यों में शारीरिक परिवर्तन होते है। छात्रावास वातावरण भी कुछ हद तक भीड़ का केन्द्र होता है।

लटनिक एवं अल्टमान (1972) ने बताया कि भीड़ का आक्रामक व्यवहार पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। ऐसा ही विचार फ्रीडमैन, लेवी बुकानन एवं प्राइस (1972) ने भी व्यक्त किया है।

---

[1] डॉ गया सिह(2012)अधिगम कर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, आर लाल बुक डिपो। पृ 91

प्रायः दैनिक जीवन में कई ऐसी स्थितियाँ आती रहती हैं, जिससे व्यक्ति आक्रामक हो जाता है। आक्रामकता की एक सीमित मात्रा कार्य की प्रेरक मानी गई है, लेकिन यदि आक्रामकता की मात्रा सामान्य से अधिक हो जाए तो वह मानसिक एवं शारीरिक दोनों ही स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो जाती है। अतः आवश्यक है कि आक्रामकता प्रबन्धन या आक्रामकता नियंत्रण या आक्रामकता शैथिल्यीकरण हेतु छोटी–छोटी अभ्यासिकाएँ की जाएं ताकि आक्रामकता की परिस्थितियों का आसानी से सामना किया जा सके क्योंकि आक्रामकता का प्रभाव विद्यार्थियों के समायोजन, अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि पर स्पष्ट रूप से देखा गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाठक,पी.ड़ी. (2007):''शिक्षा मनोविज्ञान'' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा ।
2. मदान, पूनम एवं पाण्डेय, रामशकल (2015–16) 'समसामयिक भारत और शिक्षा' अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
3. भार्गव, महेश (2007) आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण व मापन' एच.पी. भार्गव बुक हाउस आगरा ।
4. राय, नीति (2012) शोध प्रबन्ध, पीएच.डी. मनोविज्ञान, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर(उ.प्र.) ।
5. सिंह, डॉ गया (2012)अधिगम कर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।
6. चौहान, रीता (2014–15) 'शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी' अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।

❖◆❖